टिप्पणी

28

व्यवसाय का चयन और समायोजन

कार्य व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। किंतु प्रत्येक व्यक्ति हर प्रकार के कार्य करने के लिए उपयुक्त नहीं होता है। लगभग सभी प्रकार के व्यवसाय के लिए शिक्षा के एक आधारभूत न्यूनतम स्तर की आवश्यकता होती है। यहां व्यक्ति में कुछ विशिष्ट प्रकार के कौशल तथा योग्यताएं होना आवश्यक हैं जो कि व्यवसाय के दायित्वों को पूरा करने के लिए अनिवार्य होती है। यह भी महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा रूचियाँ कार्य की आवश्यकताओं के साथ मेल रखते हों। हम पहले ही व्यवसाय, कैरियर विकास के संबंध में अध्ययन कर चुके हैं तथा इस पाठ में व्यावसायिक चयन के संबंध में अध्ययन करेंगे। इस पाठ में हम व्यावसायिक समायोजन (vocational adjustment) यथा कार्य संतोष (job satisfaction) तथा कार्य प्रोत्साहन (work motivation) के संबंध में भी अध्ययन करेंगे। विभिन्न कार्य परिस्थितियों विशेष रूप से संगठनों , छोटे या बड़े, दुकानों तथा कारखानों/कार्यालयों, तथा संगठनात्मक कार्य संस्कति को समझना भी महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आपके लिए संभव होगा :

- शिक्षण नियोजन तथा व्यावसायिक चयन की आवश्यकता का वर्णन करना,
- व्यावसाय का चयन करते समय योग्यता तथा व्यक्तित्व संबंधी कारकों को समझने के महत्व का उल्लेख करना।
- व्यवसाय का चयन करने में रुचि के महत्व का वर्णन करना।

टिप्पणी

- कार्य संतोष क्या है तथा इससे संबंधित कारक क्या हैं – स्पष्ट करना।
- कार्य प्रोत्साहन की अवधारणा तथा सिद्धांतों का वर्णन करना।
- वर्णन करना कि संगठन क्या है तथा संगठनात्मक कार्य संस्कति क्या है।

28.1 शैक्षणिक एवं व्यावसायिक नियोजन

न्यूनतम स्तर की शिक्षा के बिना आपको केवल शारीरिक श्रम से संबंधित नौकरी ही प्राप्त हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि आप सरकारी कार्यालय में नौकरी करना चाहते हैं तो उसके लिए शिक्षा का न्यूनतम स्तर 8वीं पास है। शिक्षा के इस स्तर से व्यक्ति को चपरासी या चौकीदार की नौकरी मिल सकती है। किसी व्यवसाय को करने के लिए कतिपय कौशल या योग्यताओं की भी आवश्यकता होती है। इन कौशलों को आंशिक रूप से शिक्षा द्वारा, आंशिक रूप से अनुभव द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, तथा किसी के पास कुछ कौशल आंशिक रूप से होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति गीतकार का व्यवसाय चुनना चाहता है तो उस व्यक्ति में प्रशिक्षण के अलावा गाने की स्वाभाविक योग्यता भी होनी चाहिए।

स्कूल तथा कॉलेज में सामान्य शिक्षण, पढ़ने–लिखने तथा गणित संबंधी कौशलों जैसे कतिपय मूल कौशलों को उपलब्ध कराने का उद्देश्य पूरा करते हैं। यह समाज की आकांक्षाओं के अनुरूप पर्यावरण तथा परिवेशों, संस्कति तथा वांछित अभिरुचि एवं मूल्यों का ज्ञान भी उपलब्ध कराता है।

सामान्य शिक्षण तथा लक्ष्य सकारात्मक अभिरुचि का विकास करना तथा समाज के सुचारु क्रियान्वयन के लिए अपेक्षित सभी प्रकार के कार्यों को आदर प्रदान करना है। "सामान्य शिक्षण" का प्रयोग प्राइमरी स्तर से कॉलेज तक की शिक्षा के लिए किया गया है तथा इसके विभिन्न स्तर हैं यथा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक, स्नातक तथा परास्नातक।

सामान्य शिक्षा के अतिरिक्त विभिन्न व्यावसायिक, तकनीकी तथा वोकेशनल पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं जो विशिष्ट प्रकार के कौशलों को प्राप्त करने में सहायक होते हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के उदाहरण हैं चिकित्सा (डॉक्टर बनने के लिए), इंजीनियरिंग आदि। तकनीकी पाठ्यक्रमों के उदाहरण हैं – आईटीआई तथा अन्य डिप्लोमा पाठ्यक्रम, इलैक्ट्रीशियन तथा मेकैनिकों आदि के पाठ्यक्रम

कतिपय नौकरियों को प्राप्त करने तथा कतिपय पाठयक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए सामान्य शिक्षा का न्यूनतम स्तर है 10वीं कक्षा। इससे निम्न स्तर की शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हस्त कार्य (manual work) या अदक्ष श्रम के कार्य (unskilled job) प्राप्त कर सकता है।

लिपिकीय (clerical), पुलिस तथा सशस्त्र बलों में निम्न स्तर के व्यवसायों में प्रवेश के लिए न्यूनतम उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा की आवश्यकता होती है। बड़ी संख्या

टिप्पणी

में नौकरियों के लिए उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों को रेडियो तथा टीवी मेकैनिक, रैफ्रिजरेटर, एयर–कंडिशनिंग तथा स्टेनोग्राफी जैसे व्यवसायों के लिए कौशल प्रशिक्षण में कई अग्रिम स्तर का पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है।

अनेक अन्य व्यवसायों में, जहां प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से प्रवेश प्राप्त होता है, स्नातक स्तर की डिग्री (बी.ए./बी.एससी/बी.काम) की आवश्यकता होती है। इनमें शामिल हैं सिविल सर्विस (जैसे आईएएस आदि) बैंकों में लिपिकीय तथा अधिकारी स्तर की नौकरियाँ, सरकारी उपक्रमों में प्रबंधक प्रशिक्षु (यथा स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया, बीएचइएल), तथा बीमा एजेंट (यथा एलआईसी, जीआईसी आदि)। प्रबंधन, टीचिंग आदि जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए भी स्नातक डिग्री न्यूनतम शैक्षिक आवश्यकता है।

अब आपको विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के लिए शैक्षणिक योग्यता के महत्व का स्पष्ट ज्ञान हो गया होगा। इसलिए आपके लिए यह आवश्यक है कि आप अपनी रुचि के व्यवसाय के लिए आवश्यक शैक्षणिक योग्यता के प्रकार व स्तर के लिए ध्यानपूर्वक योजना बनाएं।

पाठगत प्रश्न 28.1

सही विकल्प का चयन करें :

1. माध्यमिक स्तर (8वीं कक्षा) की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात एक व्यक्ति को निम्नलिखित में से कौन–सी नौकरी प्राप्त हो सकती है:

   क. क्लर्क

   ख. इंजीनियर

   ग. चपरासी

   घ. टी.वी. मकैनिक

2. उच्चतर माध्यमिक (12वीं कक्षा) की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात एक व्यक्ति को निम्नलिखित में से कौन–सी नौकरी प्राप्त हो सकती है:

   क. क्लर्क

   ख. पुलिस

   ग. सशस्त्र बल

   घ. सभी

टिप्पणी

3. सामान्य शिक्षा में शामिल नहीं है:

   क. प्राथमिक शिक्षा

   ख. हाई स्कूल

   ग. स्नातक

   घ. इंजीनियरिंग

4. स्नातक डिग्री प्रत्यक्ष रूप से निम्नलिखित किसमें सफलता प्राप्त करने में सहायक नहीं होती:

   क. प्रतियोगी परीक्षाएं

   ख. बैंक की नौकरी

   ग. सरकारी उपक्रम

   घ. विमान पायलट

स्वयं प्रयास करें

वरीयता के आधार पर अपनी रुचि के तीन सर्वाधिक वांछनीय व्यवसायों के नाम लिखिए। इन तीनों व्यवसायों के लिए अपेक्षित न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता का पता लगाएं

व्यवसाय	शैक्षणिक योग्यता

28.2 व्यावसायिक विकल्प के लिए संगत योग्यता एवं व्यक्तित्व विशेषताएं (अभिलक्षण)

प्रत्येक प्रकार की नौकरी या व्यवसाय के लिए योग्यताओं तथा व्यक्तित्व के गुणों के विशेष प्रतिमान की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक सफल आर्किटैक्ट होने के लिए आपको मौलिक, सजनात्मक, कल्पनाशील, सुव्यवस्थित व्यावहारिक, दढ़निश्चयी, संवेदनशील, धैर्यशील होना चाहिए। मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्वों की पहचान की है जो विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त हैं।

हालांकि कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से नीचे वर्णित प्रकार के व्यक्तित्व का नहीं हो सकता है, किंतु हमें विशिष्ट कार्यों (जॉब्स) के लिए विशिष्ट व्यक्तियों की उपयुक्तता का एक अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

यथार्थवादी (Realistic): इस प्रकार के व्यक्ति ऊर्जायुक्त तथा शारीरिक रूप से बलिष्ट होते हैं। उनमें अच्छे गतिक समन्वय कौशल होते हैं किंतु मौखिक तथा अंतर–व्यैक्तिक

टिप्पणी

कौशलों की कमी होती है। इसलिए वे सामाजिक व्यवस्था में अपने आप को सुखद अनुभव नहीं करते हैं। वे स्वयं को यंत्रवत रुझान वाला समझते हैं तथा ये प्रत्यक्ष, स्थिर, प्राकतिक तथा हठी होते हैं। वे समस्याओं को अमूर्त की अपेक्षा मूर्त रूप को वरीयता देते हैं तथा स्वयं को आक्रामक रूप में देखते हैं। इस प्रकार के लोग मकैनिक, इंजीनियर, इलैक्ट्रीशियन, क्रेन प्रचालक, औजार डिजाइनर आदि व्यवसायों को वरियता देते हैं।

अन्वेषीय (Investigative): इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनका वैज्ञानिक मानसिक रुझान होता है। ये लोग सामान्यतः कार्योन्मुख (task-oriented) होते हैं, अत्यधिक विचार करते हैं तथा लोगों के मध्य सुखद अनुभव नहीं करते हैं। उनमें वास्तविक संसार को समझने की इच्छा तथा स्वतंत्र रूप से कार्य करने की इच्छा होती है। उन्हें नेतत्व की स्थिति पसंद नहीं होती है किंतु उन्हें बैद्धिक क्षमताओं के संबंध में आत्मविश्वास होता है। इस प्रकार के लोग वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, जीव विशेषज्ञ तथा मनोवैज्ञानिक जैसे व्यवसायों का चयन करते हैं।

कलात्मकता: कलात्मक प्रवति के लोग ऐसी अव्यवस्थित स्थितियों को वरीयता देते हैं जिनमें उन्हें स्वःप्रदर्शन का अधिकतम अवसर प्राप्त हो सके। वे अत्यंत सजनात्मक होते हैं विशेष रूप से कला व संगीत के क्षेत्र में। वे उच्च संरचित समस्याओं से बचते हैं तथा कला के क्षेत्र में स्व–अभिव्यक्ति वाली परिस्थितियों में जीना पसंद करते हैं। इस प्रकार के लोग कलाकार, लेखक, संगीतकार आदि व्यवसायों का चयन करते हैं।

सामाजिक: इस प्रकार के व्यक्ति लोगों के मध्य शामिल होना, समूह में कार्य करना तथा समूह में केंद्रीय स्थान प्राप्त करना पसंद करते हैं। ये सामान्यतः धार्मिक होते हैं तथा इनमें अच्छी भाषा व अंतर–व्यैक्तिक कौशल विद्यमान होते हैं। इस प्रकार के लोग सूचना, प्रशिक्षण, उपचार, सहायता आदि संबंधी गतिविधियों में खुश रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों की व्यावसायिक वरीयता में समाज सेवा, स्कूल अध्यापक, धार्मिक प्रचारक आदि शामिल हैं।

उद्यमशील: इस प्रकार के व्यक्तियों में वाचिक कौशल होते हैं जो विक्रय कार्य, अधिपत्य तथा नेतत्व आदि के लिए बहुत प्रभावी होते हैं। इनमें संगठनात्मक लक्ष्यों तथा आर्थिक लाभों को प्राप्त करने की प्रगाढ़ इच्छा होती है तथा ये लंबी समयावधि के लिए अपेक्षित बौद्धिक प्रयासों वाली परिस्थितियों से बचते हैं। वे अपने आप को आक्रामक, प्रसिद्ध, आत्म–विश्वासी, उत्साहपूर्ण, सामाजिक तथा उच्च ऊर्जा–स्तर वाले व्यक्ति के रूप में देखते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति व्यापारी कार्यपालक, राजनीतिज्ञ, प्रापर्टी डीलर, स्टाक ब्रोकर आदि व्यवसायों को प्राथमिकता देते हैं।

परंपरागत: इस प्रकार के लोग सुव्यवस्थित वातावरण को प्राथमिकता देते हैं तथा वाचिक संप्रेषण या अनेकों से संबंधित सुचारु गतिविधियों को पसंद करते हैं। ये सामाजिक संव्यवहार या शारीरिक कौशल से संबंधित परिस्थितियों से बचते हैं। ये अधिकार व संपत्ति के अधिपत्य से खुश रहते हैं। इनकी व्यावसायिक प्राथमिकताएं हैं, बैंकिंग क्लैरिकल कार्य, ट्रैफिक पुलिसमैन, दुकान में विक्रेता आदि।

टिप्पणी

ऊपर वर्णित तीन श्रेणियाँ आपको व्यक्तित्व की विशेषताओं तथा व्यावसायिक विकल्प के मध्य संबंधों के विषय में अच्छा ज्ञान प्रदान करेंगी। उपर्युक्त श्रेणियों को अंतिम नहीं माना जाना चाहिए। इन सभी श्रेणियों की विशेषताएं एक दूसरे में प्रविष्ट कर सकती हैं तथा अधिकतर व्यक्ति सुस्पष्ट रूप से एक ही श्रेणी में नहीं रखे जा सकते हैं। इसके बावजूद उपर्युक्त वर्णन योग्यताओं, व्यक्तित्व की विशेषताओं तथा व्यावसायिक विकल्पों के मध्य महत्वपूर्ण संबंधों को दर्शाता है।

28.3 क्या आप इस कार्य को कर सकते हैं?

यद्यपि हम में से अधिकतर को अपनी क्षमताओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं का युक्तियुक्त रूप से अच्छा ज्ञान होता है किंतु हमारे समक्ष संपूर्ण या सुस्पष्ट चित्र नहीं होता है। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को विकसित किया गया है जो व्यक्ति की क्षमताओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं का प्रोफाइल तैयार करने में सहायक होते हैं। आप एक मनोचिकित्सक/व्यावहारिक काउंसलर के पास जा सकते हैं तथा वह आप पर संगत मनोवैज्ञानिक परीक्षण करेगा/करेगी तथा आपको आपकी क्षमताओं के बारे में बताता है एवं व्यक्तित्व प्रोफाइल उपलब्ध कराता है और वह आपको उपयुक्त व्यावसायिक विकल्प का चयन करने में मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराता है।

जब आप विभिन्न संगठनों में सीधे या प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से नौकरी के लिए आवेदन प्रस्तुत करते हैं तो, संगठन विभिन्न परीक्षाओं की सहायता से उनकी क्षमताओं तथा व्यक्तिगत विशेषताओं का आंकलन करते हैं। उनके मस्तिष्क में उक्त पद के लिए कतिपय प्रोफाईल पहले से विद्यमान होते हैं जो उनके अनुभवों के आधार पर उक्त पद के लिए उपयुक्त होते हैं। ये संगठन आपके व्यक्तित्व प्रोफाईल प्राप्त करते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं से उनका मिलान करते हैं और इस प्रकार, नौकरी के लिए आपकी उपयुक्तता का आकलन करते हैं।

अब तक आपको व्यावसायिक विकल्प के लिए क्षमताओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं के महत्व की स्पष्ट रूपरेखा आपके समक्ष प्रस्तुत हो गई होगी। किसी नौकरी को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आपके पास न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता होनी चाहिए किंतु यही पर्याप्त नहीं है। कार्य को प्राप्त करने तथा उसके कुशल निष्पादन के लिए व्यक्ति में कतिपय गुण, क्षमताएं तथा व्यक्तित्व की विशेषताएं होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 28.2

सही विकल्प का चयन करें:

1. यथार्थवादी व्यक्तित्व निम्नलिखित कार्य के लिए उपर्युक्त नहीं है:

टिप्पणी

क. इंजीनियर

ख. वैज्ञानिक

ग. मेकैनिक

घ. क्रेन प्रचालक

2. सामाजिक व्यक्ति निम्नलिखित कार्य के लिए उपयुक्त है:

क. स्कूल अध्यापक

ख. वैज्ञानिक

ग. क्लर्क

घ. इलैक्ट्रीशियन

3. कलात्मक व्यक्ति किस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं है:

क. संगीतकार

ख. लेखक

ग. ड्राइवर

घ. कलाकार

4. उद्यमी व्यक्ति किस क्रिया में अच्छा रहेगा:

क. विक्रय

ख. नेतत्व

ग. अधिपत्य

घ. उपर्युक्त सभी

5. अन्वेषीय व्यक्ति:

क. अच्छे नेता

ख. अधिकतर लोगों के समान

ग. अपने दष्टिकोण में वैज्ञानिकता

घ. अन्य पर आश्रित

6. परंपरागत व्यक्ति उपयुक्त नहीं है:

क. सामाजिक संव्यवहार

ख. सुव्यवस्थित गतिविधियाँ

ग. अधिकार का पद

घ. दुकान में विक्रेता

टिप्पणी

स्वयं करके देखें

अपनी क्षमताओं तथा व्यक्तित्व विशेषताओं के संबंध में सोचिए। उन्हें लिखिए तथा निर्णय लीजिए कि इन छह प्रकार के व्यक्तियों में से आप किसके सबसे समीप हैं।

28.4 व्यावसाय चुनावः उभरते परिप्रेक्ष्य

इस बिंदु तक इस पाठ के अध्ययन से आप एक व्यक्ति द्वारा व्यवसाय के चयन में शिक्षा, क्षमता तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं के महत्व को समझ चुके होंगे। व्यावसायिक विकल्प में दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है – रुचि। किसी व्यक्ति द्वारा अपना कार्य कुशलतापूर्वक किये जाने के लिए यह आवश्यक है कि वह कार्य उसकी रुचि का हो। अपने कार्य से संतोष को प्राप्त करने के लिए रुचि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामान्यतः हमें अपनी रुचियों का अच्छा ज्ञान होता है किंतु कई बार हम अपनी सभी रुचियों के संबंध में स्पष्ट नहीं होते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे उपाय विकसित किए हैं जो व्यक्ति की रुचियों को पहचानने में सहायक होते हैं। इन उपायों में इस बात की आवश्यकता होती है कि आप विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिए अपने चयन को दर्शाएं। इसकी सहायता से एक मनोचिकित्सक/व्यावसायिक काउंसलर आपकी रुचियों की एक स्पष्ट तस्वीर उपलब्ध कराने में सक्षम होता है।

इस प्रकार, एक व्यवसाय का चयन करते समय यह अनिवार्य है कि व्यक्ति को उक्त व्यवसाय के लिए अपेक्षित न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता, क्षमताओं तथा उक्त व्यवसाय के लिए उपयुक्त व्यक्तित्व की विशेषताओं, तथा उस प्रकार के व्यवसाय में उस व्यक्ति की रुचि के स्तर का ज्ञान होना चाहिए। व्यक्ति द्वारा व्यवसाय का चयन करते समय अनिवार्य रूप से इन सभी कारकों पर विचार किया जाना चाहिए।

व्यावसायिक नियोजन अधिक ध्यानपूर्वक किया जाना चाहिए। सर्वप्रथम आपको अपनी रुचि के व्यवसाय हेतु न्यूनतम शैक्षणिक स्तर को प्राप्त करना होगा। आपको कौशल विकास प्रशिक्षण भी प्राप्त करना चाहिए जो कि आपके द्वारा चुने जाने वाले व्यवसाय के लिए उपयोगी होगा। अपनी क्षमताओं तथा व्यक्तित्व के गुणों का पता लगाने के लिए मनोवैज्ञानिक/व्यावसायिक काउंसलर की सहायता भी ले सकते हैं। इन सभी पहलुओं को संयुक्त करने के पश्चात ही आपको अपने व्यवसाय के संबंध में निर्णय लेना चाहिए।

आपको यह भी याद रखना चाहिए कि आपकी क्षमताएं तथा व्यक्तित्व की विशेषताएं संपूर्ण रूप से नियत नहीं हैं। ये समय के साथ परिवर्तित हो जाती हैं तथा आप स्वयं भी प्रशिक्षण व सोच–विचार कर इन्हें एक निश्चित दिशा की ओर परिवर्तित कर सकते हैं। रुचियाँ भी समय के साथ बदलती हैं। इसके अतरिक्त, आप यह भी देखेंगे कि कई बार किन्हीं व्यवसायों के लिए आप सभी पहलुओं से उपयुक्त होते हैं किंतु उन व्यवसायों में आपकी रुचि नहीं होती। किंतु कुछ समय के लिए उस कार्य में लगने के पश्चात् आपकी रुचि उसमें उत्पन्न होने लगती है।

पाठगत प्रश्न 28.3

1. व्यावसायिक विकल्प के लिए निम्नलिखित में से कौन–सी मदें महत्वपूर्ण हैं?

   क. रुचि

   ख. क्षमताएं तथा व्यक्तित्व की विशेषताएं

   ग. शैक्षणिक स्तर

   घ. उपर्युक्त सभी

2. बताएं कि निम्नलिखित में से कौन से वाक्य सही या गलत हैं :

   क. रुचि तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं में कभी भी परिवर्तन नहीं होता। सही/गलत

   ख. व्यवसाय के चयन में केवल शैक्षणिक योग्यता महत्वपूर्ण है। सही/गलत

   ग. मनोवैज्ञानिक क्षमताओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं के निर्धारण में सहायक हो सकते हैं। सही/गलत

   घ. कोई भी व्यक्ति कोई भी कार्य कर सकता है। सही/गलत

28.5 कार्य-संतोष (Job Satisfaction) क्या है?

क्या आप अपने कार्य से संतुष्ट हैं या आप अपने वर्तमान कार्य को बदलना चाहते हैं? कार्य की परिस्थितियों के दौरान कई बार हम स्वयं को अनुपयुक्त महसूस करते हैं या अपने कार्य से असंतुष्ट रहते हैं। इसके पीछे क्या कारण हैं? कार्य संतोष क्या है?

कार्य संतोष एक सकारात्मक भावनात्मक स्थिति है जो उस समय उत्पन्न होती है जब व्यक्ति का व्यवसाय उसकी आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह हमेशा धन–कारक से संबंधित नहीं होता क्योंकि कुछ लोग कार्य करने की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए कार्य करते हैं। कार्य में असंतोष कई कारणों से उत्पन्न होता है। अब हम इन पर एक–एक करके चर्चा करेंगे।

28.6 कार्य संतोष को प्रभावित करने वाले कारक

एक व्यवसाय की परिस्थितियों में व्यक्ति के संतोष को प्रभावित करने वाले अनेक कारक विद्यमान होते हैं। इन्हें मोटे तौर पर दो शीर्षकों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है: 1. संगठनात्मक कारक तथा 2. व्यक्तिगत कारक। अब हम इन्हें विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

टिप्पणी

संगठनात्मक कारक

हमारे समय का एक प्रमुख भाग हमारे कार्यस्थल पर गुजरता है। उस स्थान, जहां हम इतना अधिक समय व्यतीत करते हैं, द्वारा कुछ स्तर तक हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए। कार्यस्थल से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण कारक निम्नानुसार हैं :

1. **पुरस्कार:** पुरस्कार में वेतनवद्धि, सुविधाएं तथा पदोन्नति जैसे सभी प्रोत्साहन शामिल हैं। कार्य संतोष के लिए पदोन्नति एक प्रमुख कारक है। एक कर्मचारी कार्य–संतोष तथा बेहतर कार्य तभी कर सकता है। जब उसे पता हो कि उसे उसके देय तथा वेतन में वद्धि समय से प्राप्त हो जाएगी।

2. **भौतिक कार्य परिस्थितियाँ:** भौतिक कार्य परिस्थितियाँ जैसे आवश्यक फर्नीचर की उपलब्धता, प्रकाश सुविधाएं, कार्य–जोखिम भी कार्य संतोष में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

3. **सहयोग:** सहकर्मियों का सहयोग और व्यवहार भी व्यक्ति के कार्य संतोष के लिए महत्वपूर्ण कारक होता है।

व्यक्तिगत कारक

क्या कार्य की प्रकति व्यक्ति की रूचि की है – यह एक प्रश्न है तथा इस प्रश्न का उत्तर हमें उक्त व्यक्ति के कार्य संतोष के स्तर के संबंध में अवगत कराता है। दूसरी श्रेणी के प्रमुख कारक व्यक्तिगत कारक हैं। ये कारक निम्नानुसार हैं :

1. **व्यक्तिगत गुण:** कुछ कार्य केवल निश्चित प्रकार के व्यक्तित्वों के लिए ही उपर्युक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर या एक विक्रेता का व्यवसाय ऐसा है जिसमें इन्हें निरंतर सामान्य जनता के संपर्क में रहना होता है। यदि वे अपनी प्रकति में शर्मीले हैं या अधिक बात–चीत नहीं कर सकते हैं तो वे अपनी कार्य व्यवस्था में सफल नहीं हो पाएंगे जिसके कारण असंतोष उत्पन्न होगा। एक कार्य का चयन करते समय व्यक्ति को देखना चाहिए कि उसके पास व्यक्तित्व के वह गुण विद्यमान हैं जो उस कार्य के लिए आवश्यक है क्योंकि कार्य की प्रकति के साथ व्यक्तित्व के गुणों का मिलान करना अत्यंत आवश्यक है।

2. **प्रतिष्ठा तथा वरिष्ठता:** यह पाया गया है कि संगठन में व्यक्ति का स्तर जितना ऊँचा होगा उसका कार्य–संतोष भी उतना ही अधिक होगा।

3. **जीवन संतोष:** क्या व्यक्ति जो कार्य कर रहा है वह उसे जीवन संतोष भी प्रदान कर रहा है? एक व्यक्ति अपने जीवन में स्थापित होना चाहता है या अपने लक्ष्य को प्राप्त करना तथा क्या इन्हें वह उस कार्य के माध्यम से प्राप्त कर सकता है जो वह कर रहा है। यह वित्तीय भाग से इतर है। उदाहरण के लिए प्रकाशन का कार्य करना तथा अनुसंधानों को आयोजित करना आदि।

टिप्पणी

28.7 कार्य संतोष का महत्व

कार्य संतोष तथा उससे संबंधित कारकों का अध्ययन करने के पश्चात आप जानना चाहेंगे कि कार्य संतोष महत्वपूर्ण क्यों है। कार्य संतोष हमारे व्यावसायिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वरूप तथा कार्यनिष्पादन को प्रभावित करता है जो, कि निम्नानुसार है:

क. **मानसिक स्वास्थ्य:** यदि व्यक्ति अपने कार्य से निरंतर असंतुष्ट रहता है तो निरंतर तनाव के कारण अनेक व्यवहारात्मक असंतुलन उत्पन्न हो जाएंगे।

ख. **शारीरिक स्वास्थ्य:** कार्य संतोष व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है, यदि व्यक्ति निरंतर दबाव में रहेगा तो उसे शारीरिक समस्याएं यथा सिरदर्द, हृदय तथा पाचन संबंधी बीमारियाँ आदि उत्पन्न हो जाएंगी।

ग. **कार्य निष्पादन:** कार्य संतोष से स्वतः ही व्यक्ति का कार्यनिष्पादन बढ़ जाएगा क्योंकि जब व्यक्ति अपने कार्य की परिस्थिति से खुश रहेगा तो वह अपने कार्य में अधिक प्रयास करेगा, जिससे उसका निष्पादन बढ़ जाएगा।

कार्य प्रोत्साहन (Work Motivation)

अन्य लक्षण जो व्यक्ति के व्यावसायिक समायोजन से संबंधित हैं, वह है कार्य प्रोत्साहन या साधारण शब्दों में, एक व्यक्ति के कार्य के पीछे प्रोत्साहन बल। हमारे संगठन/संस्थान की सफलता मुख्य रूप से कर्मचारी के प्रोत्साहन (प्रेरणा) पर निर्भर करती है। जब किसी संगठन के कर्मचारियों का प्रोत्साहन (उत्साह) ऊँचा होता है तो उनका कार्य निष्पादन भी अधिक होता है।

28.8 संगठन क्या है?

संगठन एक सामाजिक इकाई है जो एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए गठित होती है। इसका निर्माण दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो एक समान लक्ष्य या लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से नियमित आधार पर संयुक्त रूप से कार्य करते हैं। इस प्रकार, सभी संगठनों में लोग विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर कार्य करते हैं।

नीचे संगठनों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

विद्यालय: विद्यालय वे संगठन हैं जहां लोग (अध्यापक तथा विद्यार्थी) संयुक्त रूप से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते हैं।

बैंक: बैंक वह संगठन है जहां लोग संयुक्त रूप से जनता के धन को सुरक्षित रखते हैं तथा वित्त संबंधी विषयों में उनकी सहायता करते हैं।

टिप्पणी

पुलिस स्टेशनः पुलिस स्टेशन वह संगठन है जहां कर्मचारी (पुलिसकर्मी) संयुक्त रूप से मिलकर लोगों को सुरक्षा प्रदान करते हैं।

बीमा कंपनीः एलआईसी तथा जीआईसी जैसी बीमा कंपनियाँ वे संगठन है जहां लोगों को वित्तीय सुरक्षा तथा उन्हें उनके सामान व जीवन की सुरक्षा प्रदान करने के लिए कर्मचारी संयुक्त रूप से कार्य करते हैं।

कॉलेज तथा विश्वविद्यालयः ये वह संगठन हैं जहां लोग संयुक्त रूप से विद्यार्थियों को विशिष्ट विषयों (यथा, गणित, जीव विज्ञान आदि) में तथा विशिष्ट व्यावसायिक कौशलों (यथा डॉक्टर, इंजीनियर) में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

जिला न्यायालय तथा उच्च न्यायालयः इन संगठनों में कर्मचारी लोगों के विवादों को निपटाने तथा अपराधियों को सजा दिलाने के लिए संयुक्त रूप से कार्य करते हैं।

मूल्य, विश्वास, अनुमान, अपेक्षा तथा मानदण्ड (नियम) जो संगठन के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं इन्हें संगठन की संस्कति कहा जाता है। जब एक व्यक्ति कोई विशिष्ट संगठन में प्रवेश करता है तो वह संगठन की संस्कति से संदर्भ प्राप्त करके सीखता है तथा स्वयं को सामाजिक बनाता है।

पाठगत प्रश्न 28.4

1. संगठन क्या है?

   _____

   _____

   _____

2. "संगठनात्मक संस्कति" से आप क्या समझते हैं?

   _____

   _____

   _____

3. ऊपर उल्लिखित में से किन्हीं तीन संगठनों के उदाहरण दीजिए।

   _____

   _____

   _____

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- कार्य किसी व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति हर प्रकार के कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता है।
- न्यूनतम प्रारंभिक स्तर की शिक्षा के बिना केवल शारीरिक श्रम वाला कार्य ही उपलब्ध हो सकता है।
- एक कार्य (व्यवसाय) को करने के लिए निश्चित प्रकार के कौशलों/क्षमताओं की भी आवश्यकता होती है।
- सामान्य शिक्षण अर्थात् प्राथमिक स्तर से कॉलेज स्तर तक तथा अतिरिक्त विभिन्न व्यावसायिक, तकनीकी तथा वोकेशनल पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं।
- प्रत्येक कार्य के लिए क्षमताओं तथा व्यक्तित्व की विशेषताओं का एक प्रतिमान अपेक्षित होता है। व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों यथा यथार्थवादी, अन्वेषीय, कलात्मक, सामाजिक उद्यमशील तथा परंपरावादी की पहचान की गई है।
- कार्य संतोष एक सकारात्मक भावात्मक स्थिति है जो उस समय उत्पन्न होती है जब व्यक्ति का व्यवसाय उसकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- कार्य संतोष कर्मचारी के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है तथा कार्य निष्पादन में वद्धि लाता है।
- कार्य प्रोत्साहन वह बल है जो कर्मचारी को कार्य परिस्थिति में अधिक कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।
- संगठन वे स्थान हैं जहां व्यक्ति निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संयुक्त रूप से कार्य करते हैं।
- जब एक व्यक्ति किसी विशिष्ट संगठन में शामिल होता है तो वह संगठन की संस्कति के संबंध में सीखता है, जिसमें संगठन के मूल्य, विश्वास, मान्यतायें, तथा अपेक्षाएं आदि शामिल हैं।

पाठांत प्रश्न

1. किन विभिन्न श्रेणियों में व्यक्तित्व की विशेषताओं को विभाजित किया जा सकता है।
2. मनोवैज्ञानिक परीक्षण क्या है? ये व्यावसायिक चयन में कैसे सहायक हो सकते हैं?
3. कार्य संतोष क्या है?

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1

1. ग, 2. घ, 3. घ, 4. घ

28.2

1. ख, 2. ख, 3. ग, 4. घ, 5. ग,
6. क

28.3

1. घ

2. क. असत्य ख. असत्य, ग. सत्य, घ. असत्य

28.4

1. यह एक सामाजिक इकाई है जिसका सजन विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
2. संगठन द्वारा स्थापित विश्वास, अपेक्षायें तथा नियम।